घटने लगती है।

सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम
(Law of Diminishing Marginal Utility)

सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम यह बताता है कि जैसे-जैसे ए वस्तु की अधिकाधिक इकाइयों का उपभोग किया जाता है, उत्तरो इकाइयों से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता घटती है। **अन्य शब्दों** जब एक उपभोक्ता एक वस्तु की अधिक इकाइयों को प्राप्त कर है तो वस्तु की अतिरिक्त इकाई से प्राप्त उपयोगिता गिरती जाती है यहां यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि एक वस्तु के उपभोग वृद्धि से उसकी सीमान्त उपयोगिता (marginal utility) में कम आती है, कुल उपयोगिता (total utility) में नहीं। इस प्रका सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम का अर्थ यह है कि कुल उपयोगित में वृद्धि होती है परन्तु घटती दर से।

मार्शल जो कि सीमान्त उपयोगिता विश्लेषण का सुप्रसिद्ध प्रतिपादक था, ने इस नियम का प्रतिपादन निम्न शब्दों में किया— **"एक वस्तु के स्टॉक में वृद्धि होने से व्यक्ति को जो अतिरिक्त**

सन्तुष्टि प्राप्त होती है वह भण्डार में हुई प्रत्येक वृद्धि से कम होती जाती है।" [The additional benefit which a person derives from a given increase of his stock of a thing diminishes with every increase in the stock that he already has.]

सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम निम्न मान्यताओं (assumptions) पर आधारित है—

1. उपभोग-प्रक्रिया के दौरान उपभोक्ता के स्वाद (tastes) अपरिवर्तित रहते हैं;
2. वस्तु की सभी इकाइयां एक समान हैं अर्थात गुण एवं आकार में सभी इकाइयां एक जैसी हैं;
3. वस्तु की दो इकाइयों के उपभोग में कोई समय-अन्तर (time-gap) नहीं पड़ता। दूसरे शब्दों में, बिना किसी समय अन्तराल के उपभोग प्रक्रिया जारी रहती है।
4. मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता स्थिर रहती है।
5. उपयोगिता का गणनात्मक संख्याओं (cardinal numbers) में माप संभव है।

सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम का स्पष्टीकरण

सारणी में एक उपभोक्ता द्वारा केले के उपभोग से प्राप्त कुल उपयोगिता एवं सीमान्त उपयोगिता को दिखाया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि उपभोक्ता द्वारा केले की प्रत्येक अतिरिक्त इकाई के उपभोग से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता घटती जाती है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि केलों के उपभोग से उपभोक्ता को प्राप्त कुल उपयोगिता में छठी इकाई तक निरन्तर वृद्धि हुई है किन्तु यह वृद्धि घटती दर से हुई है। एक विशिष्ट समय में सातवीं इकाई से अधिक उपभोग करने पर केलों से प्राप्त कुल उपयोगिता घटने लगती है अर्थात सीमान्त उपयोगिता ऋणात्मक हो जाती है।

सारणी : सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम

केला की मात्रा	*कुल उपयोगिता (यूटिल्स में)*	*सीमान्त उपयोगिता (यूटिल्स में)*
1	12	12
2	22	10
3	30	8
4	36	6
5	40	4
6	41	1
7	41	0
8	39	–2
9	34	–5

सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम की क्रियाशीलता का कारण

केनेथ ई. बोल्डिंग (Kenneth E. Boulding) के अनुसार इस नियम की कार्यशीलता के दो कारण हैं—

1. प्रथम कारण यह है कि वस्तुएं एक-दूसरे की पूर्ण स्थानापन्न (Prefect substitutes) नहीं होतीं। जब एक व्यक्ति एक वस्तु की अधिकाधिक इकाइयों का प्रयोग करता है तो उस वस्तु के लिए उस विशिष्ट आवश्यकता (Particular Wants) की तीव्रता कम हो जाती है। परन्तु यदि इस वस्तु की इकाइयां दूसरी अन्य आवश्यकताओं की सन्तुष्टि में प्रयुक्त की जा सकतीं तो उस वस्तु की सीमान्त उपयोगिता कभी कम नहीं होती।

2. सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम की क्रियाशीलता का दूसरा कारण यह है कि यद्यपि व्यक्ति की सभी आवश्यकताएं तो सन्तुष्ट नहीं हो सकती लेकिन किसी एक विशिष्ट आवश्यकता को सन्तुष्ट किया जा सकता है। इसलिए जब एक उपभोक्ता वस्तु की अधिकाधिक इकाइयों का उपभोग करता है तो उस वस्तु के लिए उसकी आवश्यकता की तीव्रता घटती जाती है और अन्त में एक ऐसी स्थिति पहुंच जाती है जिस पर वह उपभोक्ता उस वस्तु की कोई भी इकाई स्वीकार करने को तैयार नहीं होता। यहां पर वह पूर्ण सन्तुष्टि (The point of satiety) की स्थिति में पहुंच जाता है और उस वस्तु से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता शून्य हो जाता है। किसी वस्तु के शून्य सीमान्त उपयोगिता का अर्थ यह है कि एक व्यक्ति को उस वस्तु की जितनी मात्रा की आवश्यकता थी वह उसे प्राप्त हो चुकी है।

सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम के उपयोग (Application and Uses of Law of Diminishing Marginal Utility)

सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम का आर्थिक सिद्धान्त तथा नीतियों में अनेक उपयोग हैं—

1. वस्तुओं के मूल्य निर्धारण में सीमान्त उपयोगिता की धारणा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। सीमान्त उपयोगिता की धारणा से **मूल्य विरोधाभास** (Paradox of Value) की व्याख्या करने में बहुत सहायता मिली। प्राचीन क्लासीकल अर्थशास्त्री कीमत और उपयोगिता के बीच पाए जाने वाले घनिष्ठ सम्बन्ध से परिचित नहीं थे। बल्कि उनका निश्चयपूर्वक यह कथन था कि कीमत एवं उपयोगिता के बीच कोई सम्बन्ध होता ही नहीं। **ऐडम स्मिथ** (Adam Smith) ने इस सन्दर्भ में प्रसिद्ध "हीरक-जल विरोधाभास" (Diamond-water Paradox) का उदाहरण दिया

था। उनके अनुसार जल की ऊंची उपयोगिता होती है लेकिन उसकी कीमत शून्य ही होती है। इसके विपरीत, हीरे की उपयोगिता तो कम होती है लेकिन उसकी कीमत बहुत ऊंची होती है। क्लासीकल अर्थशास्त्री इस विरोधाभास का स्पष्टीकरण करने में असमर्थ ही रहे।

लेकिन आधुनिक अर्थशास्त्री **सीमान्त उपयोगिता** की धारणा द्वारा इस विरोधाभास की समुचित व्याख्या कर सकते हैं। आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार किसी पदार्थ की कीमत उससे प्राप्त कुल उपयोगिता द्वारा निर्धारित नहीं होती बल्कि यह सीमान्त उपयोगिता ही है जो किसी पदार्थ की कीमत निश्चित करता है।

प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने के कारण जल की सीमान्त उपयोगिता बहुत कम अथवा शून्य होती है। अतएव इसकी कीमत भी बहुत कम अथवा शून्य होती है। दूसरी ओर हीरे दुर्लभ (scarce) होते हैं और इसलिए उनका सापेक्ष (relative) सीमान्त उपयोगिता बहुत अधिक होती है और इस कारण उनकी कीमतें भी ऊंची होती हैं। **अतएव वस्तु की कीमत का सम्बन्ध उसकी कुल उपयोगिता से नहीं, बल्कि सीमान्त उपयोगिता से होता है।**

2. सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम का एक अन्य महत्त्व यह है कि इसकी सहायता से हम मांग के नियम की व्युत्पत्ति करने तथा इस तथ्य की व्याख्या करने में कि मांग वक्र नीचे की ओर क्यों गिरता हुआ होता है, समर्थ हैं। इसके अतिरिक्त **मार्शल द्वारा प्रतिपादित** उपभोक्ता की बचत (Consumer surplus) की धारणा भी सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम पर आधारित है।

3. सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम का अन्य महत्त्वपूर्ण उपयोग राजकोषीय नीति (fiscal policy) के क्षेत्र में है। आधुनिक कल्याणकारी राज्य में सरकार जनता के कल्याण में वृद्धि करने के उद्देश्य से आय का पुनर्वितरण करती है। धनी लोगों पर वर्धमान (Progressive) आय कर लगाकर तथा उससे प्राप्त धन को निर्धन लोगों के लिए सामाजिक सेवाओं पर व्यय करना सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम पर ही आधारित है।

सम सीमान्त उपयोगिता नियम (Law of Equi-marginal Utility)

सम सीमान्त उपयोगिता नियम हमें बताता है कि "**यदि किसी व्यक्ति के पास कोई ऐसी वस्तु है जिसके अनेक प्रयोग हैं तो वह इसे उन प्रयोगों में इस तरह बांटता है कि सभी प्रयोगों में इसकी सीमान्त उपयोगिता बराबर हो जाए।**" इस प्रकार किसी वस्तु को उसके विभिन्न उपयोगों में वितरित करते समय उपभोक्ता अधिकतम सन्तुष्टि तभी प्राप्त कर सकता है जब विभिन्न

उपयोगों में वस्तु की सीमान्त उपयोगिता समान होती है।

मान लीजिए कि उपभोक्ता अपनी निश्चित आय को जिन वस्तुओं पर व्यय करना चाहता है वे केवल दो हैं, X और Y। उपभोक्ता का व्यवहार दो बातों से प्रभावित होगा, **पहला** तो वस्तुओं से प्राप्त होने वाले सीमान्त उपयोगिता तथा **दूसरा** वस्तुओं की कीमतें। मान लें कि दोनों वस्तुओं की कीमतें उपभोक्ता के लिए निश्चित हैं। इस दशा में सम-सीमान्त उपयोगिता नियम यह बताता है कि उपभोक्ता अपनी मौद्रिक आय को विभिन्न वस्तुओं (X और Y) में इस प्रकार वितरित करेगा कि प्रत्येक वस्तु पर व्यय किए गए अन्तिम रुपए से प्राप्त उपयोगिता समान हो। अन्य शब्दों में, उपभोक्ता उस समय सन्तुलन अर्थात अधिकतम सन्तुष्टि की स्थिति में होता है जब प्रत्येक वस्तु पर व्यय की गई मुद्रा से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता समान होती है। एक वस्तु पर किए गए मौद्रिक व्यय से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता को उस वस्तु की एक इकाई से प्राप्त उपयोगिता को उसकी कीमत से विभाजित करके ज्ञात किया जा सकता है। अन्य शब्दों में—

$$MU_E = \frac{MU_x}{P_x}$$

जहां MU_E वस्तु X पर मौद्रिक व्यय का सीमान्त उपयोगिता है तथा MU_x वस्तु X से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता है तथा P_X वस्तु X की कीमत है। इस प्रकार, सम-सीमान्त उपयोगिता नियम की परिभाषा इस प्रकार से भी की जा सकती हैं—**उपभोक्ता अपनी मौद्रिक आय को विभिन्न वस्तुओं पर इस प्रकार से व्यय करेगा कि विभिन्न वस्तुओं से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता तथा उनकी कीमतों के अनुपात में समानता हो।** अत: उपभोक्ता उस समय सन्तुलन में होता है जबकि—

$$\frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y}$$

अब यदि $\frac{MU_x}{P_x}$ तथा $\frac{MU_y}{P_y}$ समान नहीं हैं तथा $\frac{MU_x}{P_x} > \frac{MU_y}{P_y}$, तो उपभोक्ता Y वस्तु के स्थान पर X वस्तु का अधिक से अधिक उपभोग करेगा फलस्वरूप वस्तु X की सीमान्त उपयोगिता घटेगी तथा वस्तु Y की सीमान्त उपयोगिता बढ़ेगी। उपभोक्ता वस्तु X का प्रतिस्थापन वस्तु Y से तब तक करता रहेगा जब तक कि $\frac{MU_x}{P_x}$ तथा $\frac{MU_y}{P_y}$ बराबर नहीं हो जाते। परन्तु $\frac{MU_x}{P_x}$ तथा $\frac{MU_y}{P_y}$ की समानता को केवल एक नहीं बल्कि व्यय के विभिन्न स्तरों पर प्राप्त किया जा सकता है। प्रश्न यह उठता है कि